कुरआन की अधिकारिता

लेखक : आयतुल्लाहिल उज़्मा सय्यद अली खामिनाई
हिन्दी: श्री उमेश दत्त

1. इस्लाम के पैग़म्बरस0 ने कुरआन की जो प्रशंसा की है (और जिस प्रकार उसका परिचय दिया है) आज इस्लामी पंथ के लिए विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है। जिस प्रकार की परत दर परत अन्धियारी और काले बादलों से मुसलमानों के जीवन का वातावरण आज अन्धेरा है इससे पहले कभी न था। यह ठीक है कि इसका पहला चरण वह था जब इस्लामी ख़िलाफ़त, आसुरी साम्राज्य से बदली कुरआने करीम एक ऊपरी ढ़ंग के संस्कार (और रीतियों) में गिना जाने लगा। वह मुसलमानों के जीवन स्तर से बाहर हो गया। परन्तु बीसवीं सदी के अज्ञानकाल में राजनैतिक पेच व ख़म और प्रोपगेन्डे के ऐसे चरण में प्रविष्ट कर दिया गया है जो कहीं अधिक जोखिम और कहीं अधिक चिंतित करने वाली बात है।

2. सबसे बड़ा माध्यम और सर्वाधिक प्रभावकारी बहाना, जिसके द्वारा इस्लाम को एक किनारे किया जा सकता था, यही था कि कुरआन को मुसलमान जन साधारण के मन–मस्तिष्क के वातावरण से निकाल बाहर किया जाए। इस्लामी देशों में उपनिवेशवादी शक्तियों के आते ही यह काम केन्द्र बिन्दु और विदेशी सत्ता लोलुपों का व्यवहार बना गया, नाना प्रकार के ढ़ंग से यह रास्ता चुना गया।

3. कुरआन जिसे स्वयं इस पुनीत ग्रन्थ में नूर (ज्योति), हिदायत, (सत्यनिर्देश), सत्य को असत्य से अलग करने वाला, ज़िन्दगी, मीज़ान (तुला), शिफ़ा (स्वास्थ्य), ज़िक्र जैसे नाम दिये गये हैं उसी वक़्त इन विशेषताओं का प्रतीक बन सकेगा जब पहले सोपान में चिन्तन मनन का केन्द्र बिन्दु और दूसरे सोपान में व्यवहार की धुरी बनाया जाए।

4. प्रारम्भिक युग, इस्लामी शासन के काल में क़ुर्आन ही अन्तिम शब्द और निर्णायक अधिकारी था। यहां तक कि स्वयं हज़रत पैग़म्बर[स0] की बात को इसी कसौटी पर परखते थे समाज में कुरआन के विद्वान समुचित मान सम्मान के धनी थे। हुज़ूर[स0] ने लोगों को समझाया, "मेरी उम्मत के गणमान्य लोग रात को जागने (नमाज़े शब) पढ़ने वाले और क़ुर्आन के हामिल हैं" उसको अर्थ पूर्ण रूप में जानने वाले। और (उस पर चलने वाले)

5. कुरआन का हामिल होना क्या है? याद करना, उसका समझना और उस पर कार्यरत होना। उन दिनों यह गुण एक समाजी "मूल्य" था। जीवन की प्रत्येक कठिनाई में क़ुर्आन की ओर पलटते थे। किसी भी बात को मानने या न मानने प्रत्येक दावे को परखने और प्रत्येक आचरण के स्वीकार करने या न करने का माप दण्ड था। वह लोग सत्य और असत्य को कुरआन द्वारा पहिचानते थे। तत्पश्चात जीवन क्षेत्र में उसके दृष्टान्त देखते और निर्धारित करते थे। जब से इस्लामी समाजों पर लद जाने वाली शक्तियां इस्लामी मूल्यों से ख़ाली हाथ और अपरिचित होने लगीं उसी वक़्त से उन्होंने क़ुर्आन को जो सत्य और असत्य के बीच "फ़ुरक़ान" है, विभाजन रेखा खींचने वाला है, अपने लिए रूकावट समझना प्रारम्भ किया फिर इस अभियान का प्रारम्भ हुआ कि परमेश्वर की वाणी को जीवन के क्षेत्र से हटा दिया जाए। इसका परिणाम यह हुआ कि धर्म समाजी जीवन से अलग और इहलोक परलोक से दूर हो गया और सच्चे धर्मधारियों और सांसारिक शक्ति चाहने वालों में ठन गयी। जीवन के क्षेत्रों और मुसलमानों के समाज में इस्लाम को प्रबन्ध और व्यवस्था के पद से हटा दिया गया। उसका

रिश्ता–नाता बस उपासना स्थलों, मस्जिदों और मानस के कोनों से समझ लिया गया है। इस प्रकार एक लम्बा घाटा पहुंचाने वाला भेद जीवन और धर्म के बीच उजागर हुआ पाश्चात्य अधिपत्य ईसाइयों और यहूदियों के सर्व दिशाई आक्रमणों से पहले अगरचे सच्चे अर्थ में कुर्आन जीवन के क्षेत्र में विजेता की स्थिति में न था। मगर यह अवश्य है कि मुसलमानों के मन–मस्तिष्क पर न्यूनाधिक उसका एक प्रभाव था। ईसाई और यहूदी आक्रमणकारी इसे भी सहन न कर सके। जो कुरआन खुला हुआ हुक्म देता है– ''उनके लिए तुम जितना बल और जितनी घोड़ों की शक्ति बटोर सकते हो, बटोरो।'' (सूरा–ए–अनफ़ाल आयत 60) जो कुर्आन फ़र्माता है,– ''और अल्लाह कदापि ईश्वर के न मानने वालों को ईमान लाने वालों पर वर्चस्व नहीं देगा (सूरा निसा, आयत41)'' जो कुरआन मोमिनों को एक दूसरे का भाई, शत्रुओं पर कड़ा ओर क्रोधित देखने की रूचि रखता है वह कुरआन ऐसे लोगों के लिए असहनीय था जो मुसलमानों के मुआमलों की लगाम अपने हाथ में लेकर उन का शोषण करके सब कुछ तबाह कर देना चाहते थे। यह सत्ता चाहने वाले भली भांति समझ चुके थे। जन साधारण की अपने जीवन में कुरआन से थोड़ा सा लगाव उनके प्रभाव और सत्ता के मार्ग को कठिन बना देगा। अतः उन्होंने कुरआन को सिरे से हटा देने की योजना बनाई। परन्तु यह योजना कदापि कार्यन्वित न हो सकेगी। खुदा ने इस्लामी पंथ से कुरआन की स्थाई सुरक्षा का वचन दिया है। यह होते हुए भी दुश्मनों के इस उद्देश्य को अंजाम तक पहुंचाने के इरादे और उनके नतीजों और प्रभावों की उपेक्षा न करनी चाहिए।

6. आज मुसलमानों की ज़िन्दगी पर एक दृष्टि डालिए, कुरआन कहां है? सरकारी संस्थाओं में है? आर्थिक व्यवस्था में है? सम्पर्क साधनों और आ़म लोगों के आपसी रिश्तों में है? स्कूलों और यूनिवर्सिटियों में है? विदेशी सियासत या अन्य सरकारों से रिश्तों में कुरआन है? जनता के बीच क़ौमी पूंजी के बंटवारे में है? इस्लामी समाज के सरबराहकारों की आ़दतों में, राष्ट्रों और जातियों के विभिन्न वर्गों में जिनके थोड़े या अधिक प्रभाव हैं, इस्लामी आदेशों के व्यक्तिगत चलन में, नर–नारी के रिश्तों, में खाने–पीने में, पहनने ओढ़ने में? ज़िन्दगी की किस असली छवि में कुरआन है? सदनों में, बैंक डिपाज़िट में, रहन–सहन में, आख़िर इंसानों के अवामी और समाजी आन्दोलनों में कहां कुरआन है? ज़िन्दगी के इतने मैदान हैं। मस्जिदों और मीनारों, अ़वाम को रिझाने और मक्कारी के लिए रेडियों के कुछ प्रोग्राम अलबत्ता अपवाद हैं। मगर क्या कुरआन बस इसीलिए है? सैय्यद जमाल–उद–दीन सौ वर्षों पहले इस बात पर रोए थे उन्होंने रूलाया था कि कुरआन तोहफ़ा देने, सजावट व साज्जा, क़र्बिस्तान में तिलावत और ताक़ों में रखने के लिए रह गया है। बताइये कि सौ साल में कोई फ़र्क़ पड़ा है क्या कुर्बानी पंथ की हालत परेशान करने वाली नहीं है?

7. बात यह है कुरआन इंसानी ज़िन्दगी का ग्रंथ है और इंसान की कोई सीमा नहीं। इंसान प्रगतिशील है। मनुष्य के बहुत से पक्ष हैं, वह इंसान जिसकी प्रगतिशीलता की न हद है न सरहद। प्रत्येक क्षण वह अगुवा है, शिक्षक और सहायता करने वाला है। मनुष्य को सभ्य और उपयुक्त ज़िन्दगी बस कुरआन ही के द्वारा सिखाई जा सकती है। अत्याचार, वर्ग भेद, झगड़े–झंझट, सरकशी, नारवायी, रूसवाई, बेईमानी जो मानव इतिहास के लम्बे युग में हुई और इंसान के विकास और प्रगति में रूकावट रही हैं उसे कुरआन ही के माध्यम से दूर किया जा सकता है मानव जीवन का घोषणा पत्र कुरआनी निर्देश बनाते हैं मात्र वही कार्य योग्य हैं और बस।

8. कुरआन की तरफ़ पलटना इंसान के सभ्य जीवन की ओर पलटना है। इस क्रिया की ज़िम्मेदारी कुरआन पर ईमान रखने वालों पर सामान्य रूप से है और कुरआन मर्मज्ञ सज्जनों पर इनसे भी अधिक है। यह धर्माचारियों और धर्म उपदेशकों की ज़िम्मेदारी है।

9. कुरआन की तरफ़ पलटना एक नारा है। यह नारा अगर यथार्थ बन जाए तो यह यथार्थ सत्य–असत्य में फ़र्क कर दे। जो शक्तियां कुरआन की ओर पलटने को नहीं सह सकतीं मुसलमानों को चाहिए कि ऐसी शक्तियों को बर्दाश्त न करें।

(बाक़ी पेज नं0 8 पर)

होता है, भूखों व बेसहारा इंसानों की तक्लीफ़ों का एहसास होता है और दिल में हुस्न–ए–सुलूक़, ईसार व सख़ावत, सदक़ा ख़ैरात की उमंग पयदा होती हैं जनाब रसूल–ए–खुदा (स0) हर मौकेअ् पर ईसार व सख़ावत का बादल बरसाते थे लेकिन माह–ए–रमज़ान में खुसूसीयत के साथ सख़ावत व ईसार के अब्र–ए–बारां रहते।

शिकमपुरी इस इहसास को मुर्दा कर देती है कि यह खुशहाली किसी का इनआम है। रोज़े की तक्लीफ़ से पूरे साल इन्आम–ए–इलाही से मुतमत्तिअ् होने की क़द्र व क़ीमत मालूम होती है और रूह शुक्रिये व सिपास के लिये झुकी है। ताअत का शौक़ बढ़ता है, मोहर्रमात से नफ्रत हो जाती है। इस की इसी अहम्मीयत से इस्लाम ने फ़ुरूअ–ए–दीन में नुमायां तौर पर ज़िक्र किया है और खुदा ने इस अिबादत को अपनी तरफ़ निस्बत दी है। हदीस–ए–कुदसी में है "रोज़े की अिबादत खास मेरे लिये है और मैं खुद उस की जज़ा दूंगा।"

सिर्फ़ फ़ाक़ा कशी से रोज़े का मक्सद पूरा नहीं हो जाता क्यों कि हक़ीक़त–ए–रोज़ सिर्फ़ आज़ा की गुरसनगी व तशनगी नहीं है बलबि इस्लामी रोज़ा शुअूर व इहसास व तसव्वुरात का दक़ीक़ा है। जनाब–ए–रसूल–ए–ख़ुदा (स0) का इरशाद–ए–गेरामी है कि "जब रोज़ा रखो तो तुम्हारा रोज़े का दिन और बेरोज़े का दिन दोनों एक तरह के न हों"।

नमाज़ से ज़ाहिरी मसावात का अिल्म होता है और रोज़े से मसावात–ए–बातिनी की तालीम मिलती है। अमीर ग़रीब सब एक हाल में होते हैं। रोज़े से इज्तिमाअी तरक़्क़ी के बहुत से फ़ायिदे उठाये जा सकते हैं इतिहाद व यकरंगी का मंज़र अंदाज़ न होना चाहिए।

अीद के दिन मस्जिदों में एक आम चहलपहल, मुश्तरक मसर्रत बहुत दिलकश होती हैं रोज़े की नाकाबिल–ए–इंकार इफ़ादीयत ही की वज्ह से लगभग दुनिया की हर क़ौम ने (पारसीयों के अलावा) किसी न किसी शक्ल में रोज़े की अहम्मीयत का इअ्तिराफ़ किया है।

रोज़े के मुताअल्लिक कुछ मस्अलेः–रोज़े से मुराद–सुब्ह–ए–सादिक से शाम तक उन चीज़ों से बाज़ रहना है जिन को शरिअ्त ने मनअ किया है।

वाजिब रोज़े–रमज़ान या उस की कज़ा के रोज़े अह्द का रोज़, कसम, नज़्र, और क़फ्फारों के रोज़े बड़े बेटे पर, किसी मय्यत की तरफ़ से उज्रत लेके, इअ्तिकाफ़ के रोज़े।

सुन्नत रोज़े।

यह बहुत सारे हैं, रजब और शाबान के महीनः भर के रोज़े हर चांद के महीने की 13 वीं, चौदहवीं और पन्दरहवीं के रोज़े वग़ैरः।



(पेज नं0 6 बक़िया)

10. इस्लामी भाई बहनों! हम भी कुर्आन से दूर पड़े कुरआन विरोधी अन्तर्राष्ट्रीय योजना के मारे हुए थे। कुरआन की तरफ़ पलटने का आनन्द नहीं देखा था। ईरान की वैभवशाली इस्लामी क्रान्ति और इस्लामी गणतन्त्रीय व्यवस्था की स्थापना इस पलटने की एक बरकत का प्रभाव है। आज यह क़ौम ज़िन्दगी के वातावरण समाजी–सम्बन्ध, शासन के गठन और स्वरूप, अपने नेताओं के हाव–भाव, विदेश–नीति, शिक्षा–दीक्षा में कुरआनी शिक्षा की कुछ चिन्गारियां देख रही हैं। अब तक कुरआन के स्वर्ग की ठण्डी हवा का एक झोंका हम तक आया है लेकिन इस वास्तविक जन्नत के अन्दर जाने का रास्ता खुला है।

11. हमें गौरव है कि हमने चेतना के काम कुरआन की आवाज़ को सौंप दिए हैं। सभी क़ौमों की ज़िम्मेदारी भी यही है। विशेषकर धर्माचार्य बुद्धिजीवी, धर्मउपदेशकों, लेखक और शोधकर्ता सज्जनों का यह सबसे बड़ा कर्तव्य है।

